ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 167-169**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

ग्रामीण महिलाओं के सशक्तिकरणः चुनौतियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

1. अखिलेश यादव
2. प्रो0 राम नरेश यादव

1. शोध अध्येता, 2. शोध निर्देशक, समाजशास्त्र विभाग, श्री मुरली मनोहर टाउन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलिया (जे.एन.सी.यू. बलिया) (उ0प्र0) भारत

Received-30.08.2024, Revised-09.08.2024, Accepted-15.09.2024 **E-mail :dr.akhileshyadav972@gmail.com**

सारांशः ***महिलाओं के साथ सदियों से भेदभाव होता आ रहा है। इस पुरूष प्रधान समाज में प्रत्येक क्षेत्र में स्त्री को एक वस्तु के रूप में उपयोग किया गया। महिलाओं के साथ भेदभाव की स्थिति लगभग सभी समाजों में रही है। इस स्थिति में बदलाव के लिए इस दिशा में सकारात्मक प्रयास किये गये, मार्च 1975 को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाया जाने लगा। विश्व मे नारी आन्दोलन की नींव 19वीं शताब्दी में ही रखी गई। पश्चिम के कई राष्ट्र उस दौर में उस आन्दोलन में भागीदार बने। नारी आन्दोलन जब समाने आए तक ही स्त्री सशक्तिकरण की एक अवधारणा दुनिया के समख प्रमुखता से आई। इसलिए स्त्री सशक्तिकरण को समझने के लिए नारी आन्दोलन को समझना भी अति आवश्यक है। नारी आन्दोलन की शुरूआत समाज द्वारा नारी को निम्नतर समझने से हुई। नारीवाद का महत्वपूर्ण सिद्धान्त है कि इस पितृसत्तामक समाज में स्त्री हीन दर्जा प्राप्त है यह समाज ही उसके लिए जीवन जीने के नियम और स्वरूप को गठित करता है। भारत में 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया गया तथा महिलाओं के कल्याण हेतु पहली बार राष्ट्रीय महिला उत्थान नीति बनाई गयी, जिसमें महिलाओं की शिक्षा, रोजगार और सामाजिक सुरक्षा में सहभागिता को सुनिश्चित किया। सामाजिक आर्थिक नीतियों बनाने के लिए महिलाओं को प्रेरित करना, महिलाओं पुरूषों को समाज में भागीदारी निभाने हेतु प्रोत्साहित करना, बालिकाओं एवं महिलाओं के प्रति विविध अपराधों के रूप में व्याप्त असमानातों को खत्म करना सरकार ने भी महिलाओं की स्थिति को सुधारने के लिए बहुत सारी योजनाओं की शुरूआत की।***

कुंजीभूत शब्द – महिला सशक्तिकरण, पुरूष प्रधान समाज, नारी आन्दोलन, पितृसत्तामक समाज, सामाजिक सुरक्षा

नारी सशक्तिकरण का मतलब है किसी व्यक्ति या चीज को सशक्त बनाना यानी उसे शक्ति, अधिकार या प्राधिकार देना, यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके तहत शक्तिहीन लोगों को अपने जीवन की परिस्थितियों को नियंत्रित करने के बेहतर मौके मिल जाते हैं। सशक्तिकरण का अर्थ किसी व्यक्ति समुदाय या संगठन की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, शैक्षिक, लैंगिक या आध्यात्मिक शक्ति में सुधार भी हो सकता है। किसी भी देश समाज अथवा समुदाय को समृद्ध बनाने के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक है।

उद्देश्य– मेरे इस शोध पत्र का उद्देश्य यह हे कि महिलाओं के सशक्तिकरण के मार्ग में आने वाली कठिनाईयों, चुनौतियों पर प्रकाश डालना, वर्तमान महिलाओं की दशाओं का वर्णन करना।

महिला सशक्तिकरण की चुनौतियाँ–

आदिम समाज में नारी की चुनौतियाँः यह मनुष्य जाति का आरम्भिक काल था इस काल मे मनुष्य ने धनुष और बाण का आविष्कार किया, जिनसे शिकार करते और एक सामूहिक जीवन की शुरूआत की इस सामुदायिक जीवन में स्त्री–पुरूष एक साथ एक स्थान पर समूह में निवास करने लगे। यहाँ भी नारी एक वस्तु थी, एक स्त्री सभी भाईयों की पत्नी होती थी। उससे उत्पन्न पहला बच्चा बड़े भाई का होता था और वह नीचे क्रम में उसी प्रकार उतरता जाता था। समूह से पृथक उसका अस्तित्व नहीं था। यह उसके जीने की चुनौती थी जिसे आदिम समाज से उपजी परिस्थिति थी। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि परिस्थितियां नारी को चुनौती दे रहीं थी। खेतिहर समाज तक आते–आते मनुष्य भूमि का स्वामी बन बया और उसकी वैयक्तिक सम्पत्ति बन गयी।

एकाकी परिवार से चुनौतियाः भारतीय समाज और पाश्चात्य समाजों में एकाकी परिवारों की संस्कृति में बहुत अन्तर है। कुछ वैयक्तिक मजबूरियां और आवश्यकताओं ने एकांकी परिवार की बनावट को पति–पत्नी और बच्चों तक सीमित किया है, पर नारी को इस परिवार से भी जिम्मेदारियों की चुनौतियां मिलती रही है। घरेलू महिलाओं और कामकाजी महिलाओं की चुनौतियों में अंतर है। उदाहरण के लिए निर्धन परिवार की घरेलू महिला मात्र घर का ही कार्य नहीं करती, बल्कि परिवार चलाने के लिए छोटे–मोटे काम भी करती है। उसके सामने बच्चों के पालन–पोषण की एक बड़ी चुनौती है इसे किसी भी शहर की मलिन बस्ती के निम्न जीवन स्तर से आने वाले परिवारों में देखा जा सकता है।

कामकाजी महिला को अनेको चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जहॉ एक तरफ परिवार की जिम्मेदारी वहीं दूसरी ओर कार्यालय, स्कूल या कार्यस्थल पर विभिन्न स्तरों पर पुरूष साथी एवं अधिकारियों के साथ सामंजस्य बनाने की चुनौतियां। उनकी घर और बाहर की दुनिया में अनेक चुनौतियां हैं।

धर्म और जाति से चुनौतियाः भारत की आधी आबादी महिलाओं की है फिर भी वह सदियों से आभाव में जी रही हैं। यह सामन्ती एवं पुरूष प्रधान समाज की सोच और षडयन्त्र का वह तरीका है कि स्त्री या पुरूष को यह कहकर समझाया जाता है कि वर्तमान जीवन पूर्व कर्मों का परिणाम है। क्या किसी स्त्री के पूर्व जन्म के कर्म इतने खराब थे कि दहेज की वजह से उसे जलाकर मार दिया जाता है।

रूढ़िवादी विचारों एवं धर्म की कट्टरपन सोच ने स्त्रीशक्ति को बढ़ने नहीं दिया और न ही उसे शिक्षा का अवसर दिया और न ही बाह्य जगत से सम्पर्क करने दिया गया। स्त्री को बढ़ने से यदि रोका गया है, तो उसके पीछे नारी को धर्म की यह चुनौतियां अनादि काल से मिलती आ रही हैं।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

जाति व्यवस्था की चुनौतियां: जातियों के संस्तरण में स्त्री को आदिकाल से जाने कितने प्रकार की चुनौतियां दी है। जाति के आधार पर स्त्री को स्त्री से अलग कर दिया गया। स्त्री वर्ग को अनेक वर्गों में विभाजित कर दिया समाज ने इन्हें ऐसे कार्य सौंपे कि यह अपनी ही दृष्टि में छोटी और बड़ी है निम्न और उच्च है। स्त्री का यह वर्ग विभाजन स्त्री को आज गम्भीर चुनौतियां दी है। यदि पुरूष की ही आर्थिक स्थिति निम्न है, तो उसके परिवार की नारी की भी निम्न ही होगी, बल्कि उससे भी गिरी होगी।

आरक्षण की चुनौतियां: शासन व्यवस्था कैसी है? कैसे देश के विधान है? इस पर संवैधानिक रूप से सभी को उन्नति और शिक्षा के अवसर प्रदान करता है किन्तु यहॉ पर स्त्रियों के साथ भेदभाव होता है। आरक्षण पाने के लिए अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

स्त्री सुरक्षा की चुनौतियां: संविधान के उददेश्यों में स्पष्ट लिखा है कि सामाजिक, आर्थिक न्याय और समानता का प्रश्न है क्या देश की समस्त नारियों को उनकी योग्यता, क्षमता, शिक्षा के आधार पर बिना जाति धर्म व सम्प्रदाय के बिना किसी भेदभाव को उनकी सामाजिक सुरक्षा का दायित्व सरकार पूर्ण कर रही है। यह नारी जगत के लिए एक गम्भीर चुनौती है और सरकार के लिए चेतावनी भी कि वह वोट बैंक की राजनीति से ऊपर उठे।

वैश्विक संस्कृति की चुनौतियां: ग्लोबल शिक्षा के व्यापक और विशाल क्षेत्र है जो निम्न व मध्यम वर्ग के लिए चुनौती बन चुके हैं इसमें एक कठोर प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र बनाया है जहाँ योग्य एवं सक्षम महिलाएं ही प्रवेश पा सकती हैं।

स्त्रियों को ग्लोबल शिक्षा से चुनौतियाँ–

तकनीकी और प्रबन्धकीय शिक्षा:

- एयरपोर्ट मैनेजमेन्ट
- एयरोनॉटिकल मैनेजमेन्ट
- ऑनलाइन कैरियर
- सिनेमेटोग्राफी
- रिहैबिलिटेशन
- पैरामेडिकल क्लीनिक एण्ड हॉस्पिटल
- फार्मास्युटिकल मैनेजमेन्ट

वैश्वीकरण ने विश्व स्तर के तकनीकी और सामान्य बाजार की स्थापना की है जो स्त्रियों के सौन्दर्य से सीधे जुड़ा है, क्योंकि नारी के लिए बॉडी फिटनेस बाजार एक महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। उनकी जीविका के लिए चुनौती भी कि वे इस जॉब के लिए अपने को उपयुक्त बनाएं :

- इंटीरियर डिजाइनिंग
- ऐकरिंग
- इवेंट मैनेजमेन्ट
- फैशन डिजाईनिंग भी एक पनपता कैरियर है।
- न्यूट्रीनिस्ट और डायटीशियन का कैरियर भी है।
- डाइटिंग कैरियर

भूमण्डलीकरण और कामकाजी महिलाओं को चुनौती– नारी के लिए घर के बाहर की दुनिया बिल्कुल पृथक होती है। कम्पनी अथवा कार्यालय में पुरूषों की संख्या अधिक और महिलाओं की कम होती हैं। यहाँ नारी को तरह–तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। स्त्री आज भी पुरूष की दृष्टि में उसके समकक्ष नहीं है। सामाजिक न्याय, समानता और मानवीय भावना के आधार पर उन्हें नहीं देखा जाता है। वे अभी भी शरीर सौन्दर्य का आकर्षण बनी हुई है। कामकाजी युवतियों व महिलाओं को महानगरों और नगरों में तरह–तरह की चुनौतियां मिलती हैं, जिसका उन्हें पूर्व ज्ञान नहीं होता है। जीवन की व्यावहारिकता आने के बाद उनका अनेक प्रकार की चुनौतियों से साक्षात्कार होता है। यहाँ प्यार और सेक्स का प्रदर्शन एक आम बात है। अपनी प्रगति व उन्नति को लेकर वह बहुत सी चुनौतियों को झेलती हैं। वास्तव में नारी को असंख्य प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। जीवन तो चुनौतियों से भरा है। यह चुनौतियां ही नारी को संघर्ष करने की प्रेरणा देती हैं।

नारी सशक्तिकरण के मार्ग में नारी को अनेक प्रकार की चुनौतियां मिलती हैं। नारी की भी अपनी चुनौतियां हो सकती है। शिक्षित और कामकाजी महिलाओं की भी चुनौतियां समाज, शासन, प्रशासन और पितृसत्तामक समाज से होगी। निश्चित ही यह सामान्ती सोच और पुरूष प्रधान व्यवस्था से उनकी चुनौतियां है। प्रसिद्ध लेखिका नासिरा शर्मा लिखती हैं "मुझे इस सत्य को स्वीकार करना पड़ा कि अस्सी प्रतिशत शोषित महिलाओं के बीच बीस प्रतिशत महिलाएं ऐसी हैं जो मर्दों और स्त्रियों का जम के शोषण करती है।" दुनिया 21वीं सदी में पहुँच गई और हम अब भी रूढ़िवादी सोच व मानसिकता से उबरे नहीं है।

ऑनर कीलिंग के रूप में चुनौती: बहुत शिक्षित और सभ्य होने का दावा करने वाले अभी प्रगतिशील युग में भी हम बहुत अशिक्षित और असभ्य हैं। अभी हम जातिवादी संकीर्णता से उबर नहीं पाए हैं। लड़की के परिवार वाले अन्तर्जातीय

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-III, Issues-33, YEAR-July-Sept. 2024

विवाह को सहन नहीं कर पाते और अवसर मिलते ही इन प्रेमी युगलों की हत्या, कहीं–कहीं केवल लड़कियों को उनके घर वाले मार देते हैं। महिला की अस्मिता उसकी स्वतंत्रता, उसकी स्वतंत्र इच्छा जैसे आज भी कोई महत्व नहीं रखती।

स्वतंत्रता के 75 वर्ष हो जाने के पश्चात भी नारी सामाजिक जीवन में हो या पारिवारिक, कार्यालय में हो या सार्वजनिक स्थानों व उत्सवों में, वह कहीं भी सुरक्षित नहीं। मानवीय सोच में अनैतिकता का घोल इतना अधिक घुल गया है कि इन्सानियत लुप्त होती जा रही है। समाज को नारी की चुनौती है कि यह सरकार, शासन, जनप्रतिनिधि और दकियानूसी परिवार के लोग हमारा कब तक शोषण करते रहेंगे।

निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि नारी के विकास के अभाव में समाज का स्वास्थ्य चित्र सम्भव नहीं है। नारी को चुनौतियां और नारी की चुनौतियां कहा से जन्मती हैं। क्या नारी से सम्बन्धित उत्पीड़न, शोषण, अत्याचार युग विशेष की देन है, अथवा यह प्रत्येक युग में किसी न किसी रूप में रहे हैं। क्या स्त्री के प्रति मां, पत्नी, बहन आदि के सम्बन्ध में कोई मायने नहीं रखते हैं। पुरूष ही नारी, उत्पीड़न, शोषण, अत्याचार और नारी हिंसा के लिए उत्तरदायी है। यह विकृत मानसिकता का प्रतीक है, जिसमें पुरूष का अहम् सर्वोपरि है कि नारी उसकी दास है उससे जैसे चाहो वैसा उसके साथ व्यवहार करो। महिला सशक्तिकरण से 21वीं सदी में प्रगतिशील शिक्षित परिवारों में पति–पत्नी के रिश्तों में समानता की भावना उत्पन्न हो रही है। पत्नी मात्र पत्नी ही नहीं वह मित्र और सहयोगी भी और सलाहकार भी है। वही नारी सशक्तिकरण में पुरूष सहयोगी बन रहा है। समाजशास्त्री योगेन्द्र सिंह का विचार है कि स्वतंत्रता के पश्चात बहुत से महत्पूर्ण परिवर्तन हो रहे हैं।

इतना तो कहा जा सकता है कि नारी सशक्तिकरण का आन्दोलन आकार ले रहा है छोटे से लेकर बड़े से बड़े पदों पर आज महिलाएं है, नगरों की महिलाओं में अपने प्रति जागरूकता बढ़ी है। स्वावलम्बी बनने की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है। उच्च शिक्षा और तकनीक शिक्षा में निरन्तर प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। यह सभी उदाहरण नारी सशक्तिकरण के बढ़ते कदम के हैं और यदि पुरूष सहयोगी बनकर नारी के व्यक्तित्व के गढ़ने में लग जाए तो परिवार, समाज व देश प्रगति के पक्ष पर अग्रसर होता जाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, ग्रेट वीमन ऑफ इण्डिया, अद्वैत अक्षम दिल्ली।
2. दूबे श्यामाचरण, समय और संस्कृति, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।
3. पाण्डेय डॉ0 सरोजनी, भारतीय धर्म, समाज और नारी ग्रन्थन कानपुर।
4. सिंह वी0एन0, जनमेजय सिंह, नारीवाद रावत पब्लिकेशन नई दिल्ली।
5. गर्ग डॉ0 संजय, स्त्री विमर्श का कालजयी इतिहास सामयिक पेपर बैक्स नई दिल्ली।

*****